ढोंगी लड़ैया

एक बुन्देलखण्डी लोककथा

मनोज साहू 'निडर'   चित्रः कैरन हेडॉक

एकलव्य

एक लड़ैया थो। बो दिन भर
इतै-उतै घूमत-फिरत थो।

एक दिना बो घूमत-घामत गाँव में भरा गओ और एक घूड़े पे बैठ गओ। घूड़े पे कछु गोबर पड़ो थो और कछु किताब के पन्ना डरे थे।

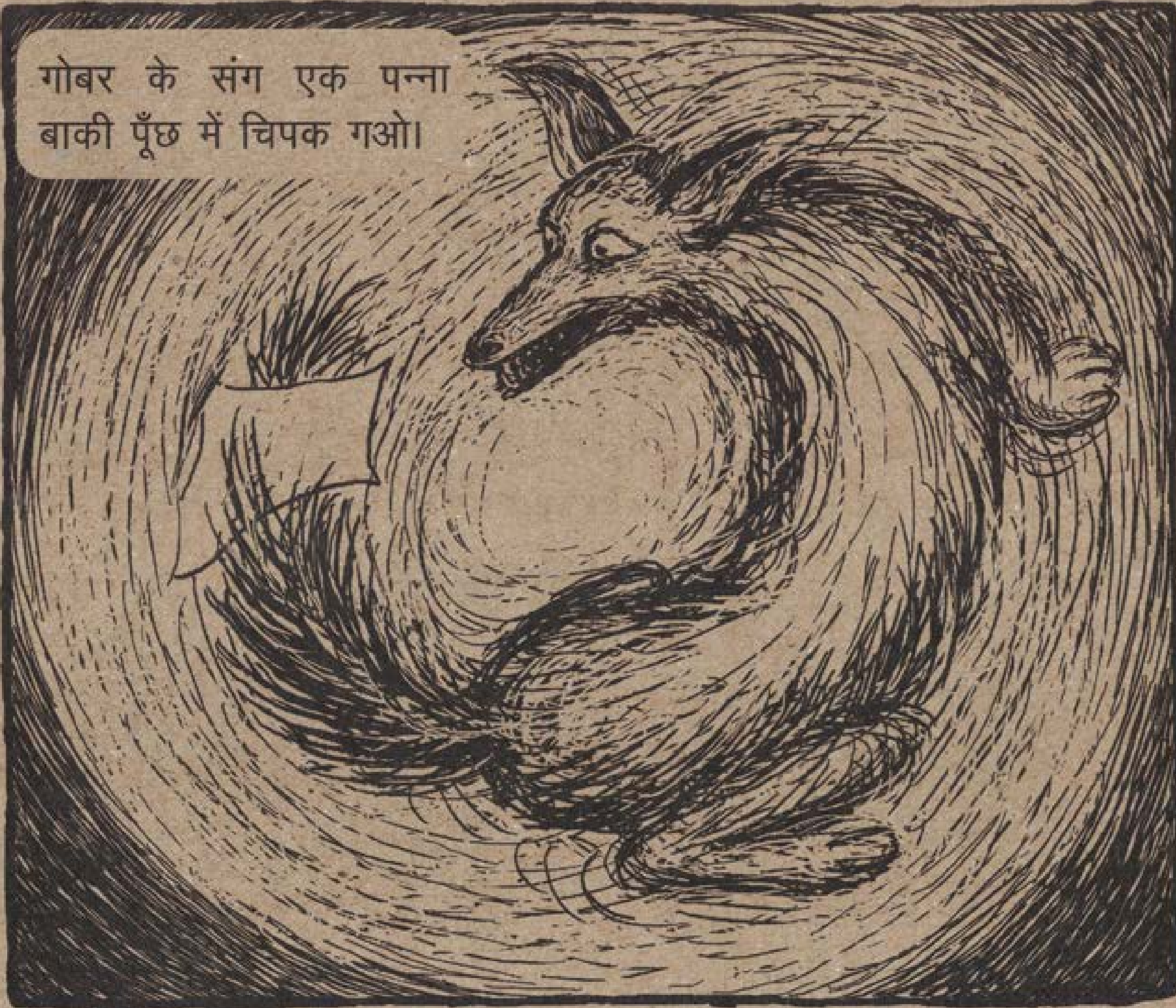
गोबर के संग एक पन्ना
बाकी पूँछ में चिपक गओ।

लड़ैया भगत-भगत अपने दूसरे गोइयों के पास पोंचो। पूँछ में पन्ना चिपको देख के एक ने कई, "काय भैया जों तेरी पूँछ में का फँस रओ है।"

जा सुन के लड़ैया कछु अकड़ के बोलो, "अरे! जो तो मेरी सरपंची को पट्टो है, आज से मैं तुमरो सरपंच हूँ। अब हम कहीं भी बेखटका आ-जा सकत हैं।"

जा सुनके सबरे लड़ैया भोत खुस भये। उनने सरपंची को परसाद बाँट दओ।

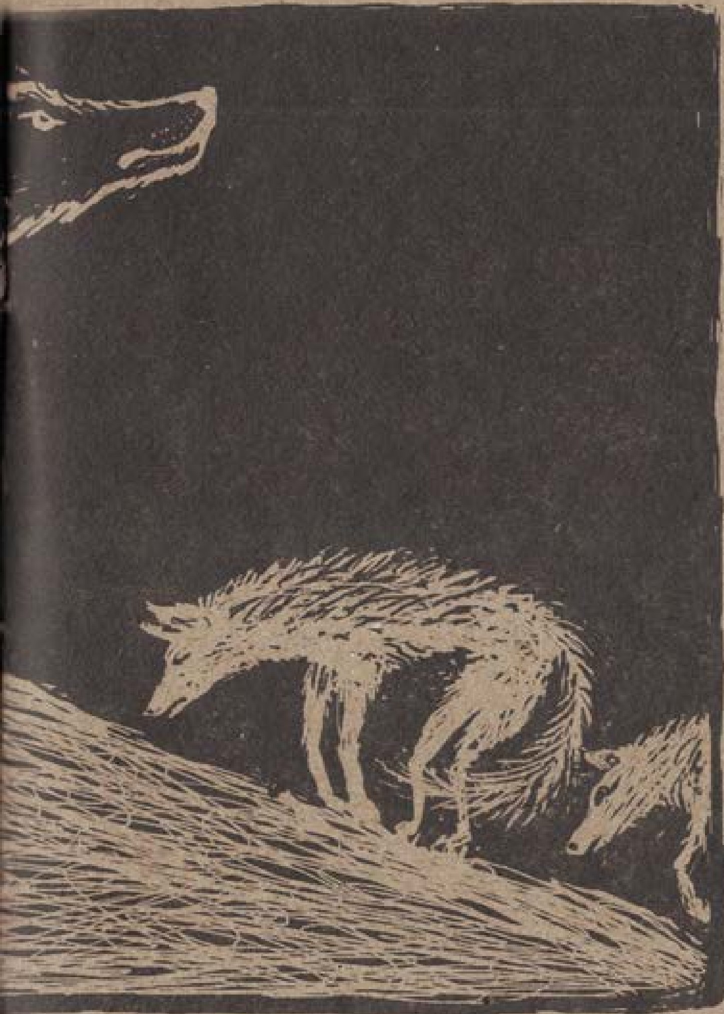

अब तो नए सरपंच जू जितै से भी निकरें, उन्हें देख के सब कोई राम-राम करवे के लाने खड़ो हो जात। जो देख के लड़ैया भैया फुलन्दी में आ गये।

एक लड़ैया बोलो, "सरपंच जू तुम में और हम में कोई फरक नई है, सो कछु ऐसो उपाय करो के तुमाई अलग पहचान हो जावे और हम दूर सेई चीन्ह लेवें के सरपंच जू चले आ रये हैं।"

जा बात सरपंच जू हे जम गई।

फिर सब पंचों ने विचार करके एक तीन-चार हाथ को डण्डा सरपंच जू की पूँछ से बाँध दओ।

जा देख के लड़ैया भैया फूल के कुप्पा हो गए। अब तो बे जितै से भी निकरें खड़-खड़ की आबाज आन लगे।

आबाज सुनके सब लड़ैया खड़े होके राम-राम करन लगे। ऐसई दिन बीतत रये।

एक दिना कछु लड़ैया जुड़ गए और सरपंच जू से बोले, "दद्दा, आज हमरो मन गाँव में घूमवे को हो रओ है, तनक हमें गाँव की सैर तो करा लाओ।" जा सुनके लड़ैया भैया कछु सुटपुटान से लगे।

जा देख के एक ने कई, "दद्दा, अब काय डिरा रये हो, अब तो अपने पास पट्टो लिखो धरो है।" जा सुन के लड़ैया भैया कछु नई बोले और मन मार के उनके संग लग लये।

जब सबरो झुण्ड गाँव के बगल में पोंचो तो उन्हें देख के गाँव के कुत्ता एक जिंघा जुड़ के भौंकन लगे।

कुत्तों खों भौंकत देख सरपंच जू
पीछे पिछलन लगे।

जा देख के सबरे लड़ैया कहन लगे, "दद्दा डिरा काय रये हो, अपनो पट्टो दिखा दो।"

सरपंच जू रुआँसे होके बोले, "अब जे गँवारों खों का पट्टा दिखाओ, जे का पढ़े-लिखे हैं? इनके मों लगवे को कोऊ फायदा नई।"

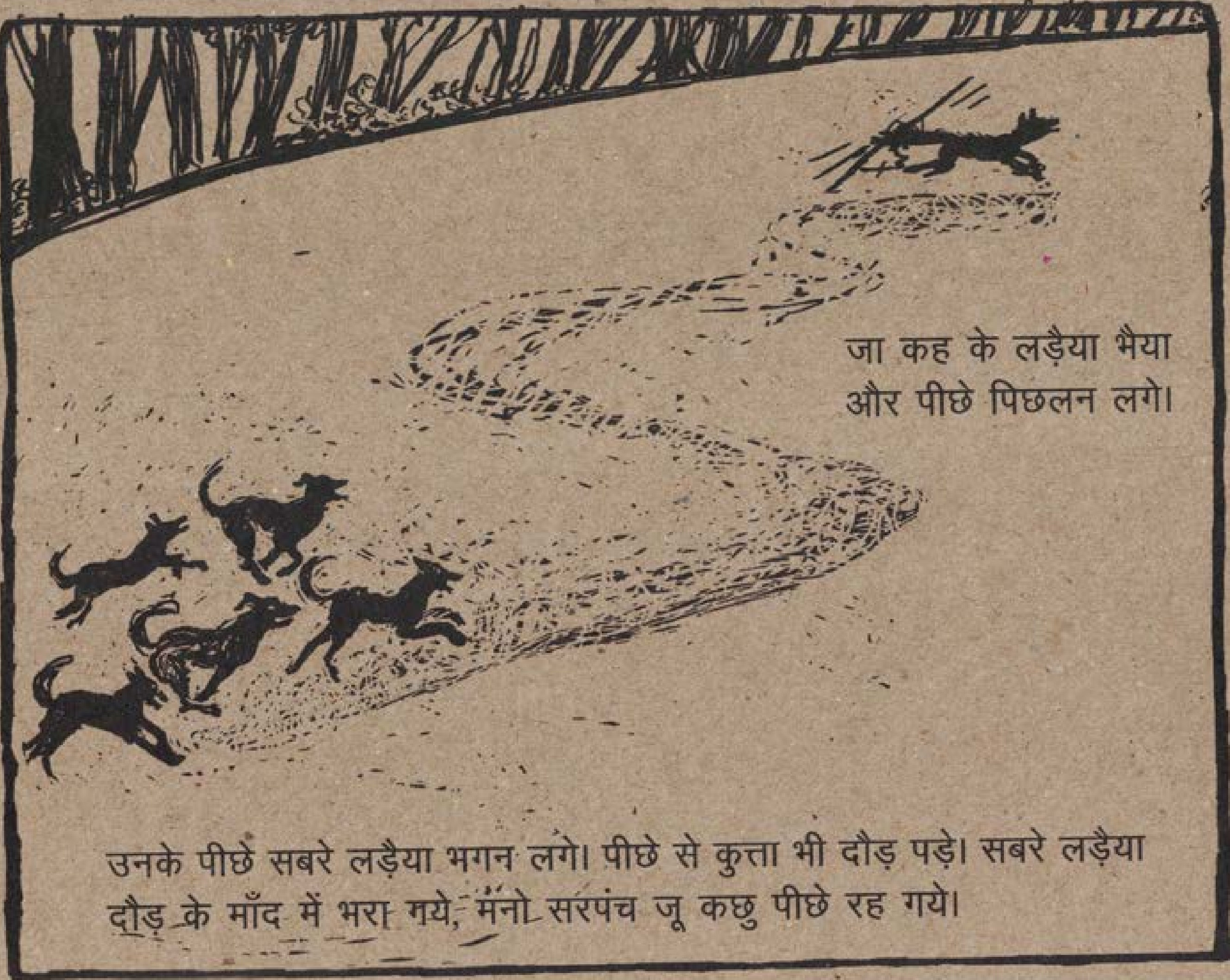

जा कह के लड़ैया भैया
और पीछे पिछलन लगे।

उनके पीछे सबरे लड़ैया भगन लगे। पीछे से कुत्ता भी दौड़ पड़े। सबरे लड़ैया दौड़ के माँद में भरा गये, मनो सरपंच जू कछु पीछे रह गये।

उनकी पूँछ से बँधो डण्डा अड़
गओ, उनने खूब दम लगाई
मनो वे भीतर नई भरा पाये।

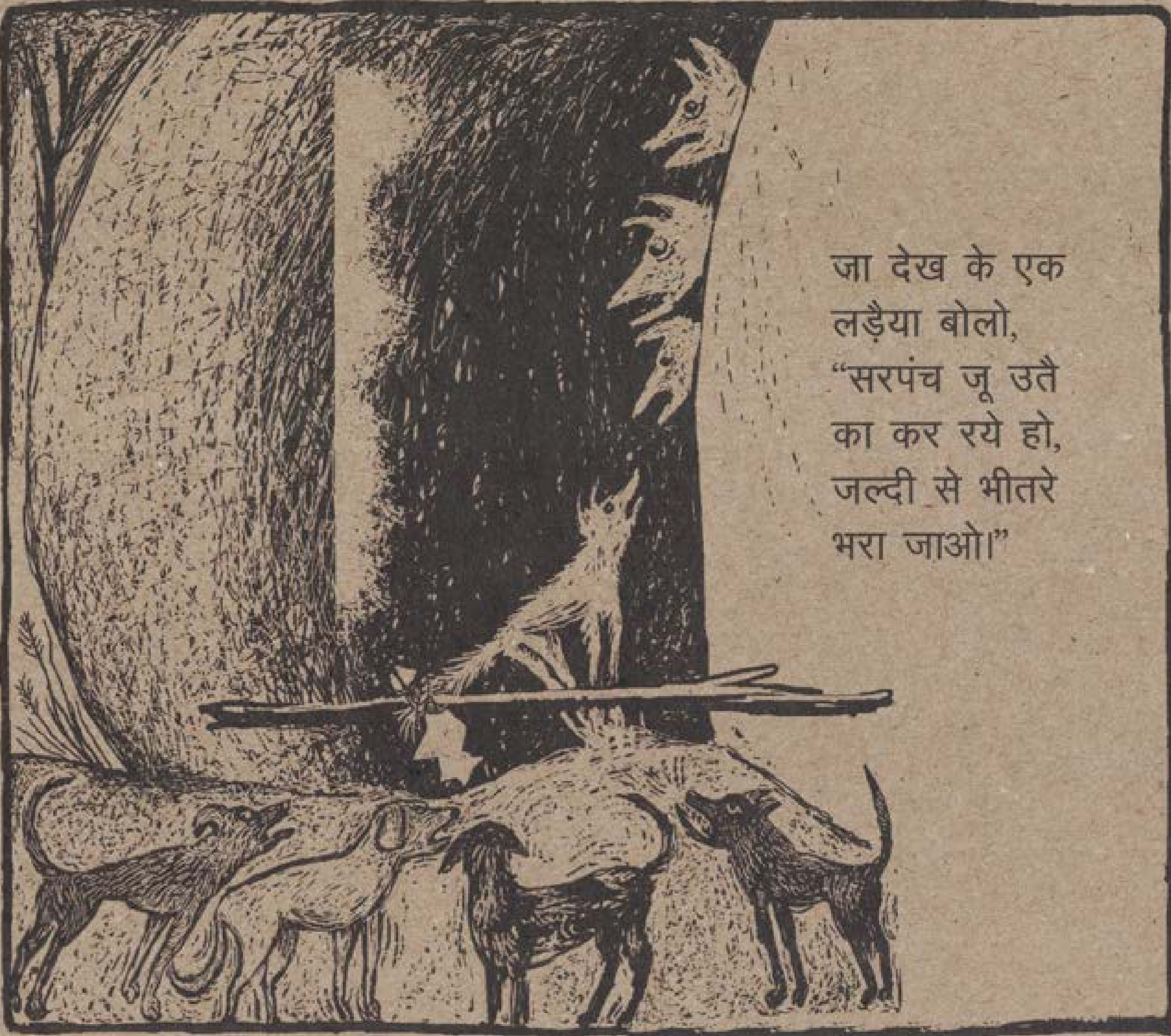

जा देख के एक
लड़ैया बोलो,
“सरपंच जू उतै
का कर रये हो,
जल्दी से भीतरे
भरा जाओ।”

सरपंच जू बोले, “मैं का करूँ भैया मेरी सरपंची तो बाहर अटक रई है।” लड़ैया भैया भई कसमसात रह गये। बाकी सबरे लड़ैया डिरा के माँद में चिमा गये। किस्सा हती खतम।

ढोंगी लड़ैया / DHONGI LADAIYA

कहानी: मनोज साहू 'निडर'
चित्र: कैरन हेडॉक
डिज़ाइन: कनक शशि
सम्पादन: सीमा

कहानी: मनोज साहू 'निडर', मार्च 2020

यह किताब क्रिएटिव कॉमन्स के Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) लाइसेंस के अन्तर्गत है जिसका पूरा विवरण https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/ पर उपलब्ध है।

इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक के ज़रिए लेखक से अवश्य सम्पर्क करें।

चित्र: कैरन हेडॉक, मार्च 2020

यह किताब क्रिएटिव कॉमन्स के Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) लाइसेंस के अन्तर्गत है जिसका पूरा विवरण https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/ पर उपलब्ध है।

इन चित्रों का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में चित्रकार और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

यह कहानी बाल विज्ञान पत्रिका चकमक में भी प्रकाशित हुई है।

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

संस्करण: मार्च 2020/ 3000 प्रतियाँ
कागज़: 140 gsm ब्राउन क्राफ्ट पेपर
ISBN: 978-93-87926-46-2
मूल्य: ₹ 30.00

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72-73 www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल: फोन: +91 755 268 7589

कहानी में आए कुछ बुन्देलखण्डी शब्दों के अर्थ:	
इतै-उतै – इधर-उधर	जितै – जहाँ
भरा गओ – अन्दर आना	भईं – वहीं
घूड़े – कूड़े-करकट का ढेर	जिंघा – जगह
मनो – लेकिन	चिमा गए – दुबक गए
फुलन्दी – गर्व से इतराना	सुटपुटाना – डरना

मनोज साहू 'निडर'

मनोज साहू 'निडर' युवा शिक्षक व रचनाकार हैं। शासकीय माध्यमिक विद्यालय पौजरा खुर्द में पढ़ाते हैं। गतिविधि आधारित शिक्षण व लोक साहित्य में गहरी रुचि रखते हैं।

अक्कड़-बक्कड़, बैठ घोड़ा पानी पी, एक दो दस, खेलो गणित – उनकी ये सभी किताबें एकलव्य से प्रकाशित हैं।

कैरन हेडॉक

अमरीका में बायोफिजिक्स में पीएचडी करने के बाद 1985 से भारत में कला, विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होंने बच्चों के लिए अनेक कहानियों की किताबों व पाठ्यपुस्तकों का लेखन और चित्रांकन किया है। वर्तमान में वे टाटा इंस्टीट्यूट फॉर सोशल साइंसेज, मुम्बई में आईसीएसएसआर की वरिष्ठ फेलो हैं। आप उनकी वेबसाइट को यहाँ देख सकते हैं – www.khaydock.com

"काय लड़ैया भैया जो तेरी पूँछ में का फँस रओ है?"

"अरे! जो तो मेरी सरपंची को पट्टो है, आज से मैं तुमरो सरपंच हूँ।"

अब तो नए सरपंच जू जितै से भी निकरें, सब लड़ैया खड़े होके राम-राम करन लगे। ऐसई दिन बीतत रये।

पर एक दिना...

एकलव्य

parag

AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

मूल्य: ₹ 30.00

9789387926462